रमेश कुमार यादव
हिन्दी - विभाग डी.के. कालेज
डुमरॉव, बक्सर, बिहार

साहित्य - भाषा विज्ञान -

साहित्य एक प्रकार से भाषा का स्थायी रूप है, इसलिए भाषाविज्ञान के अध्ययन का बहुत महत्वपूर्ण आधार है। जिस भाषा का साहित्य नहीं है, उसके भाषा वैज्ञानिक अध्ययन का अवकाश भी कम है, उसे भाषा का कम से कम ऐतिहासिक और तुलनात्मक अध्ययन तो सम्भव नहीं ही है। वैदिक, संस्कृत, प्राकृत अपभ्रंश आदि भाषाओं का ऐतिहासिक दृष्टि से विकास देखना - समझना इसीलिए सम्भव है कि उनमें विस्तृत और सम्पन्न साहित्य उपलब्ध है अन्यथा इन भाषाओं की भी वही स्थिति होती जो मुंडा, सँथाली या संसार की ऐसी हजारों अन्य भाषाओं की है।

सैकड़ों भाषाएँ, जो भाषावैज्ञानिक दृष्टि से बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकती थी, आज लुप्त हो चुकी हैं, और उनका साहित्य न होने से उनके अध्ययन का भाग भी अवरुद्ध है। प्राचीन अंग्रेजी से मध्यकालीन अंग्रेजी और मध्यकालीन से आधुनिक अंग्रेजी में क्या अन्तर है और वह कब हुआ, इसका विवेचन उपलब्ध साहित्य के आधार पर ही हो पाता है। हमारे यहाँ ऋग्वेद

में प्रयुक्त भाषा के पहले भी कोई भाषा रही होगी, किन्तु उसका साहित्य प्राप्य न रहने से उसके सम्बन्ध में आज कुछ भी कहने में हम असमर्थ हैं।

ऐतिहासिक दृष्टि से ही नहीं, तुलनात्मक दृष्टि से भी साहित्य भाषा वैज्ञानिक अध्ययन के लिए पर्याप्त सामग्री प्रस्तुत करता है। संस्कृत, ग्रीक, लातिन, ईरानी, स्लाविक या यूरोप की अनेक अन्य भाषाएँ, जिन्हे आज हम भारत - यूरोपीय परिवार में रखते हैं, एक ही स्रोत से निकली हैं, यह जानना साहित्य के द्वारा ही सम्भव हो पाया है। सम्भव है इस परिवार की और भी भाषाएँ विभिन्न स्थानों में प्रयुक्त होती रही हो, किन्तु आज उनका कोई साहित्य उपलब्ध न होने से उनके विषय में कुछ भी कहना असम्भवप्राय है। तात्पर्य कि भाषा के ऐतिहासिक और तुलनात्मक अध्ययन की सामग्री मुख्यतः साहित्य ही प्रस्तुत करता है।

जहाँ साहित्य भाषाविज्ञान के अध्ययन में उपयोगी है, वहाँ भाषाविज्ञान भी साहित्य के लिए कम उपयोगी नहीं है।

प्राचीन साहित्य में बहुत सारे शब्द ऐसे मिलते हैं जिनका अर्थ आसानी से समझ में नहीं आता। कभी-कभी ऐसा भी देखा जाता है कि एक ही शब्द पहले दूसरे अर्थ में प्रयुक्त होता था और आज दूसरे अर्थ में प्रयुक्त हो रहा है। जैसे 'असुर' शब्द का अर्थ देवता से बदलकर राक्षस हो गया। ऐसे स्थलों का समाधान भाषाविज्ञान की सहायता से सुलझ ही जाता है। भाषा-विज्ञान ध्वनि-परिवर्तन या अर्थ-परिवर्तन के कारणों को स्पष्ट कर सन्देह का निवारण कर देता है। इतना भी नहीं, भाषावैज्ञानिक आधार पर साहित्य का विश्लेषण करने के लिए शैली विज्ञान नामक स्वतन्त्र शास्त्र का विकास हो गया है जो निर्विवाद रूप से साहित्य और भाषा-विज्ञान के उपकार्योपकारक-भाव और अन्योन्याश्रयत्व को सिद्ध करता है।

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट-प्रोफेसर
हिन्दी-विभाग
डी. के. कालेज डुमराँव
(बक्सर बिहार)